

Yoga, Music, Meditation, Sacred Festival in Pushkar, India

Date : January 5, 2018



This year was the third in a sequence that the “The Sacred” Pushkar, a festival of Sacred Music, Yoga and Meditation, organized at the sacred lake of yogis in Pushkar, Rajasthan. In previous years, such prominent teachers were invited like Ken Chokden Rinpoche who was teaching about meditation on mindfulness, love and compassion. Za Choeje Rinpoche about Tibetan Heart Yoga practice and Geshe Dorje Damdulla about Meditation on Generating Bodhicitta. This time the originators wrote to Rinpoche to send an instructor to demonstrate Yantra Yoga and Vajra Dance. At the end, Zoltan Cser from Hungary went to the festival where on a beautiful stage was leading a one and half hour Yantra Yoga session for local and foreign participants, many of them were yoga teachers from different traditions. After Yantra Yoga there was a demonstration of Vajra Dance with five volunteers dancing together three rounds of the Vajra Dance That Liberates Beings. The organizers were very satisfied. decided to invite someone from Dzogchen Community next

time, and also the participants were surprised at how wonderful practices are that we can learn from Rinpoche. Thank you, Master!



PUSHKAR: REJUVENATING THE INNER SPIRIT



After His Correspondent

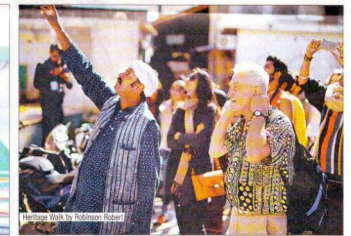
The third edition of the two-day Show Cement The Sacred, Pushkar culminated on Sunday with musical performances, meditation sessions and explorations

through the city along the ghats, heritage spots and local enterprises. The Sacred, Pushkar, organised by Teamwork Arts and supported by Show Cement, brought a unique atmosphere of joyful celebration in the timeless and sacred environs of city and, along with a colourful programme for visitors and local audiences, also showcased local Rajasthan artists including a Sacred Art display by Ajay Rawat from Pushkar; a colourist mural on the wall of Pushkar Inn's resort by Udgapur based illustration and muralist Manta Singh and a photo exhibition titled Eternal Pushkar by Aljona based Deepak Sharma.



Vajra Yoga Guided Session by Zoltan Csor from Bulgaria

The second day of the Festival opened early on Sunday Morning as the sun rose at the Jaipur Ghat with Vajra Yoga and Vajra Dance: Meditation in Movement sessions by Zoltan Csor from Bulgaria. This was followed by Indian Classical Ra-



Heritage Walk by Robinson Robert

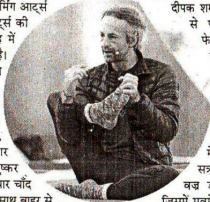
gias on the flats by Anil Shankar. The sound of the flute complemented the serenity of the morning by the late, Atri Shankar was accompanied by Kamshik Mitra on Bayloorka and Mihir Natta on the tabla. Curated walks in the afternoon and the crowd to explore the town's diverse religious, ar-

chitectural, culinary and handicrafts offerings. There was also a Nagada workshop by Nishchhal Sainani who taught various techniques and beats on the Nagada. Another exploratory walk took participants for a visit on the ropeway to the Swirri Temple, along the highest hill in Pushkar, which provided a panoramic view of the Pushkar Lake and was timed to soak in the crimson sunset.

After spending an eventful day enjoying the ghats and by-lanes of Pushkar, the scintillating evening music marked the culmination of the Festival at the ethereal Jaipur Ghat. after@ourgr@ndia.net

दो दिवसीय श्री सीमेंट द सेक्रेड पुष्कर 2017 संपन्न

पुष्कर। दो दिवसीय श्री सीमेंट द सेक्रेड, पुष्कर के तीसरे संस्करण का रविवार को बेहतरीन संगीत प्रस्तुतियों, योग और मेडिटेशन के सत्रों के साथ भाव्य तरीके से समापन हो गया। परफॉर्मिंग आर्ट्स एंटरटेनमेंट कंपनी टीमवर्क आर्ट्स की ओर से आयोजित इस समारोह में श्री सीमेंट ने सहयोग दिया है। पवित्र नगरी पुष्कर में दर्शकों को अद्भुत अनुभव कराने के लिए राजस्थान के साथ ही पूरे देश और बाहर के देशों से आध्यात्मिक संगीतकार, मेडिटेशन गुरु और कलाकार पहुंचे थे। श्री सीमेंट द सेक्रेड, पुष्कर ने शहर के भक्तिमय माहौल में चार चौदह लगाते हुए भावपूर्ण कार्यक्रमों के साथ बाहर से पहुंचे आगंतुकों और स्थानीय दर्शकों को सुभाषा। स्थानीय कलाकारों को भी यहां पर अपनी प्रतिभा दिखाने का खूब मौका मिला। रेगिस्तान के कलाकार के रूप में मशहूर पुष्करवासी अजय रावत ने सैंड आर्ट का प्रदर्शन किया। उदयपुर की चित्रकार ममता



सिंह ने पुष्कर इन रिसोर्ट की दीवार पर शानदार रंगीन भित्ती चित्र बनाया। अपने कैमरे में पुष्कर की जीवंत संस्कृति को कैद करने वाले अजमेर के दीपक शर्मा ने जीवंत पुष्कर नाम से फोटो प्रदर्शनी लगाई। फेरिदवल का दूसरा दिन रविवार को सुबह जल्दी शुरू हुआ और जयपुर घाट पर सूर्योदय के साथ बुल्गारिया के जौल्टान जेर ने यंत्र योग और खज्र ख़ास: मेडिटेशन इन मूवमेंट के सत्र को निर्देशित किया। खज्र ख़ास एक मेडिटेशन है जिसमें मूवमेंट और साउंड दोनों का संगम होता है जिसमें व्यक्ति मनन की स्थिति में पहुंच जाता है। इसके बाद अतुल शंकर ने बांसुरी पर भारतीय शास्त्रीय संगीत पेश किया। शंकर ने बांसुरी का प्रशिक्षण स्व पंडित भोलानाथ प्रसन्ना और स्व पंडित खेलवान जी से लिया था जो बनारस धरने के

प्रतिपादक माने जाते हैं। उन्होंने राग जैत के साथ शुरुआत की और उसके बाद दादरा शैली में हमारी अदरिया पे आ जा रे साबरिया जैसी लोकप्रिय प्रस्तुतियां दीं। उन्होंने रघुपति रावज राजा राम भी बजाया। उनकी बांसुरी के राग ने पुष्कर झील की शांति को झलकाते हुए दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कीर्लोई पर कौशिक मित्रा और तबले पर मिहिर नट्टा अतुल शंकर की संगत कर रहे थे। दर्शकों ने दोपहर बाद पुष्कर भ्रमण में विभिन्न धार्मिक, स्वास्थ्य, रसोई और हस्तशिल्प संबंधी कलाओं का आनंद लिया। इस भ्रमण में दर्शक पुष्कर की गलियों से गुज़रे और बरया मंदिर, पुरानी मस्जिद, विभिन्न घाटों से होते हुए खाने पीने की दुकानों से होकर गुज़रे। प्रसिद्ध नगाड़ा वादक नधुहाल सोलंकी ने नगाड़ा कर्कशांग आयोजित की जिसमें उन्होंने नगाड़ा की विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी। एक अन्य भ्रमण में दर्शकों ने रोपवे से पहाड़ी की चोटी पर बने सावित्री मंदिर के दर्शन किए जहां से पुष्कर झील का सुंदर दृश्य और सूर्यास्त की तालिमना का नजारा देखने को मिला।